॥ परमात्मा जयति ॥

दयानन्दमत दर्पण ।

रचा सब सृष्टिको जिसने उसी को सर झुकाओ जी ।
करो तुम ध्यान उसका ही उसी से लौ लगाओ जी ॥१॥
तुम्हें अब मत दयानन्दी की बातें कुछ सुनाता हूं ।
जगत् को जाल में उसके वृथा तुम मत फसाओ जी ॥ २ ॥
लिखीं ग्यारहसौ सत्ताइस शाखा उसने वेदों की ।
जरा महाभाष्य से स्वामी का लेख अपने मिलाओ जी ॥ ३ ॥
लिखा है उसने शाखाओं को जो व्याख्यान वेदों का ।
किसी शाखोंमें तो व्याख्या श्रुतिकी तुम दिखाओ जी ॥ ४ ॥
जिन्हें तुम वेद कहते हो वह शाखा शाकलादि हैं ।
न समझो वेद शाखाओं को तो वेद और लाओ जी ॥ ५ ॥
लिखा है वेद की व्याख्या में हा वध्र नीलगायों का ।
यजु के भाष्य से इसको कृपा करके मिटाओ जी ॥ ६ ॥
लिखा है नाचना गाना बजाना स्वामी साहिब ने ।
बुरा जो तुम नहीं जानो तो सीखो औ सिखाओ जी ॥ ७ ॥

३-४ सत्यार्थप्रकाश मुद्रन सन् १८८४ का पृष्ठ ५८७ ॥
६ दयानन्द कृत यजुर्वेद भाष्य अ० १३ मं० ४६ का भावार्थ
७ उक्त भाष्य अध्याय ३० मंत्र २० का भावार्थ ॥

यजु के भाष्य में उसने लिखा घी दूध बकरे का ।
कहो जो तुम कहीं ऐसा तो जड़ बुद्धि कहाओ जी ॥ ८ ॥
जो वृद्धी चाहो सांपों की कहां बुद्धी तुम्हारी है ।
जगत् को इससे दुःख होगा कि सुख तुम्हीं बताओजी ॥ ९ ॥
लिखा गुरु जी का जो मानो तो उल्लू को भी पालो तुम ।
ये स्वामीजी की आज्ञा है गधों को भी बढाओ जी ॥ १० ॥
अरे वैश्यो ! तुम्हें उस ने लिखा है ऊंट के सदृश ।
बनाये जो पशु तुमको उसे गुरु क्यों बनाओ जी ॥ ११ ॥
लिखी शूकर की जो उपमा उस अज्ञानी ने भूपति को ।
उचित है तो किसी राजाको तुम जाकर सुनाओजी ॥ १२ ॥
लिखा तुम वेद और ईश्वर की आज्ञा का करो पालन ।
समंजस है कि असमंजस ये लेख उसका बताओजी ॥ १३ ॥

---

८ उक्त भाष्य अध्याय २१ मन्त्र ४३ का पदार्थ ।
९ उक्त भाष्य अं० ३० मन्त्र २१ का पदार्थ ।
१० उक्त भाष्य अ० २४ मन्त्र २३ का पदार्थ । तथा अध्याय १९ मन्त्र ३९ का पदार्थ ।
११ उक्त भाष्य अध्याय १४ मन्त्र ९ का पदार्थ ।
१२ उक्त भाष्य अध्याय १६ मन्त्र ५२ का पदार्थ ।
१३ उक्त भाष्य अध्याय १० मन्त्र २२ का भावार्थ ।

लिखा विद्वान् को उसने जो आमाता को सदृश है।
हंसो उस बुद्धि पर उसकी जगत् को तुम हंसाओ जी ॥ १४ ॥
अनृतवादी को लिक्खा है असुर राक्षस प्रकट उसने।
उसे इस दोष से कैसे भला अब तुम बचाओ जी ॥ १५ ॥
जिसे सत्यार्थ कहते हो असत् ही की वह खानि है।
सुनाऊं मैं अनृत उसका सुनो सबको सुनाओ जी ॥ १६ ॥
लिखा है पूतना का अंग जैसा चौड़ा और लम्बा।
जरा एक भागवत में तो हमें वैसा दिखाओ जी ॥ १७ ॥
कथा प्रहलाद की जो कुछ कि स्वामी जी ने गाई है।
असत् है झूठ है मिथ्या है अनृत है मिटाओ जी ॥ १८ ॥
चटाई के सदृश पृथ्वी को राक्षस ने लपेटा था।
ये जिस पुस्तक में लिक्खा हो उसे तुमही जलाओ जी ॥ १९ ॥
रथेन वायुवेगेन जगाम गोकुलं प्रति।
कहां है भागवत में यह दिखाओजी दिखाओजी ॥ २० ॥
भला हेमाद्रि में वर्णन कहां श्री भागवत का है।

---

१४ उक्त भाष्य अध्याय २७ मन्त्र ३४ का पदार्थ।

१५ उक्त भाष्य अध्याय १ मन्त्र ५ का भावार्थ।

१७ सत्यार्थप्रकाश मुद्रित सन् १८८४ का पृष्ठ ३३४

१८। १९ उक्त सत्यार्थप्रकाश का पृष्ठ ३३३।

२० उक्त सत्यार्थप्रकाश का पृष्ठ ३३४।

जो कुछ सन्देह है पढ़कर उसे तुम मन मनाओजी ॥ २१ ॥
न देवी भागवत में भी लिखी गाथा कहीं वैसी।
कि जैसी विष्णु शिव ब्रह्मा की निन्दा तुम सुनाओजी ॥२२॥
जो उसने एक स्त्री को पति ग्यारह की आज्ञा दी।
करो ये ही श्रुति से सिद्ध पण्डित को बुलाओ जी ॥ २३ ॥
लिखा है गर्भिणी को भी नियोग उसने जरा समझो।
दुबारा गर्भ फिर कैसे भला धारण कराओ जी ॥ २४ ॥
पति परदेश को जाये जने घर पत्नी सुत पीछे।
गुरू की आज्ञा मानो तो धर्म उसका चलाओ जी ॥ २५ ॥
श्रुति के अर्थ में देखो किया कैसा अनर्थ उसने।
पति कर दूसरा प्यारी ये पत्नी को सिखाओ जी ॥ २६ ॥
ये छापे की अशुद्धि है कि है अज्ञान गुरु जी का।
बिना हठ और दुराग्रह के तुम्हीं सच २ बताओ जी ॥ २७ ॥

---

२१ उक्त सत्यार्थप्रकाश का पृष्ठ ३३५।
२२ उक्त सत्यार्थप्रकाश का पृष्ठ २६६।
२३ उक्त सत्यार्थप्रकाश का पृष्ठ ११८।
२४ उक्त सत्यार्थप्रकाश का पृष्ठ १००।
२५ उक्त सत्यार्थप्रकाश का पृष्ठ ११६।
२६ उक्त सत्यार्थप्रकाश का पृष्ठ ११८।

कहीं भी शास्त्र में मुक्ति से लौट आना नहीं लिक्खा।
जरा बातें करो सीधी न उलटे गीत गाओजी ॥ २८ ॥
जो कारागार और फांसी सदृश मुक्ति को बतलाये।
उसे अर्थों के अधिपति की कोई पगड़ी बंधाओ जी ॥ २९ ॥
वचन को व्यास के जिसने कहा प्रतिकूल वेदों के।
हम उसको नास्तिक कहते हैं तुम चाहो सो गाओजी ॥ ३० ॥
श्रुति प्रत्यक्ष कहती हैं अनावृत्ति है मुक्ति से।
विरुद्ध उनके बताकर तुम भला क्या लाभ उठाओजी ॥ ३१ ॥
कहो परमात्मा का नाम नारायण जो निज मुख से।
तो है यह नास्तिकता जो बुरा उसको बताओ जी ॥ ३२ ॥
कहीं स्थिर नहीं चलना लिखा है उसने पृथ्वी का।
भला इस दोष से कैसे उसे अब तुम बचाओ जी ॥ ३३ ॥

---

२८ उक्त सत्यार्थप्रकाश का पृष्ठ २४० ।
२९ उक्त सत्यार्थप्रकाश का पृष्ठ २४१ ।
३० उक्त सत्यार्थप्रकाश का पृष्ठ २३६ ।
३२ उक्त सत्यार्थप्रकाश का पृष्ठ १६ फिर २६ ।
३३ दूसरी बार की छपी संस्कार विधिके पृष्ठ १२१ में पृथ्वी के स्थिर होने की श्रुति है और ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका के पृष्ठ १३६ से १३१ तक तथा उक्त सत्यार्थप्रकाशके पृष्ठ २२८ में पृथ्वी का चलना लिखा है ॥

लिखे सौ वर्ष के दिन जो सो वह भी दशगुणे लिक्खे ।
तुम ऐसे मूर्ख को कैसे भला पण्डित बताओ जी ॥ ३४ ॥
जो भाषा ग्रन्थ सब मिथ्या हैं स्वामी जी की बुद्धि में ।
तो फिर सत्यार्थको भी तुम नदी में अब बहाओ जी ॥ ३५ ॥
मनु के श्लोक से जो कुछ दशा वर्णों की लिक्खी है ।
कहां आशय है वह उस का न झूठ गीत गाओजी ॥ ३६ ॥
शिखा और सूत्र के त्यागी को ईसाई सदृश लिक्खा ।
किया दोनों का त्याग उसने उसे तुम क्या बताओ जी ॥३७॥
लिखा है युद्ध से भागे नृपति शत्रु को धोखा दे ।
कहां गीता में है ऐसा ये धोखा तुम न खाओ जी ॥ ३८ ॥
असुर राक्षस पिशाच उसने अविद्वानादि को लिक्खा ।
जो हों ऐसे समाजों में उन्हें तुम क्या बताओ जी ॥ ३९ ॥
हों गुण और सन्तानों में जिस २ वर्ण के सदृश ।
तुम उस २ वर्ण से बदला सुतादिक का कराओ जी ॥ ४० ॥

---

३४ उक्त सत्यार्थप्रकाश का पृष्ठ २४१ ।
३५ उक्त सत्यार्थ० का पृष्ठ ७१ ।
३६ उक्त सत्यार्थ० का पृष्ठ ८८ ।
३७ उक्त सत्यार्थ० का पृष्ठ ३७१ ।
३८ सत्यार्थ० का पृष्ठ ११ ।
३९ उक्त सत्यार्थ० का पृष्ठ ५८।८८ ।
४० उक्त सत्यार्थ० का पृष्ठ ८१ ।

जो इस आज्ञा का पालन हो तो हाहाकार मचजाये।
ये है किस वेद की आज्ञा कोई यह तो बताओ जी ॥ ४१ ॥
लिखा जानश्रुति को शूद्र है यह अज्ञता कैसी।
लिखा है व्यासने शूद्रप्रिय न अब जिह्वा हिलाओ जी ॥ ४२ ॥
जो निर्जल व्रतके लेखक को कसाई लिख दिया उस ने।
लिखा जिसने कि गोभक्षक उसे तुम क्या बताओ जी ॥४३॥
लिखा है शूद्र को, जब मन्त्र पढ़नेका निषेध उस ने।
तो कैसे वेद का पढ़ना उसे फिर तुम बताओ जी ४४ ॥
लिखा सुख दुःख में परतन्त्र स्वामी जी ने जीवों को।
तो फिर क्यों कर्म करनेमें स्वतन्त्र उन को बताओ जी ॥४५॥
कहां लिक्खा है शङ्कर की हुआ मृत्यु का विष कारण।
भला क्या दोष जैनों को वृथा झूठा लगाओ जी ॥ ४६ ॥
मनुके नामसे लिक्खा है धन सन्यासियों को दे।
मनुमें श्लोक वह आधा लिखा गुरुका दिखाओ जी ॥ ४७ ॥

४२ उक्त सत्यार्थ० का पृ० ३३६।
४३ उक्त सत्यार्थ० का पृष्ठ ३४५।
४४ उक्त सत्यार्थ० का पृष्ठ ४४ फिर ७४।
४५ उक्त सत्यार्थ० का पृष्ठ ५१०।
४६ उक्त सत्यार्थ० का पृष्ठ २९७।
४७ उक्त सत्यार्थ० का पृष्ठ १३५।

समित् पाणी श्रुति उस ने लिखी माण्डूक्य की मिथ्या ।
मृषा अग्निर्यथैको० को न मुंण्डक का बताओ जी ॥ ४८ ॥
न देखे उस ने उपनिषद् को जो चाहा सोई लिख मारा ।
तदैक्षत् तैत्तिरीयकी कहो झूठे कहाओ जी ॥ ४९ ॥
लिखा है नाम से वेदों के उस ने वाक्य गीता का ।
कहो विद्वान् जो उस को तो वेदों में दिखाओ जी ॥ ५० ॥
भला जो आचमन से पित्त और कफ शान्त होता है ।
तो फिर रोग ग्रसित होकर न वैद्यों को बुलाओ जी ॥ ५१ ॥
बिना भोगे नहीं छुटता कभी अघ तुम यह कहते हो ॥
तो प्रायश्चित्त पतितों को वृथा फिर क्यों कराओजी ॥ ५२ ॥
अनन्त होने में जीवों के जो तुम झगड़ा मचाते हो ।
कहीं तो शास्त्र में गणना हमें उन की दिखाओ जी ॥ ५३ ॥
नरक और स्वर्ग से लोकों को भी जो तुम नहीं मानो ।

४८ उक्त सत्यार्थ० का पृष्ठ ३८२ फिर २१० ।
४९ उक्त सत्यार्थ० का पृष्ठ २१० ।
५० उक्त सत्यार्थ० का पृष्ठ १२६ ।
५१ उक्त सत्यार्थ० का पृष्ठ ४१ ।
५२ उक्त सत्यार्थ० का पृष्ठ ३२२ ।
५३ इस के खण्डन में भी मुन्शी इन्द्रमणि जी का अनन्तरत्न प्रकाश देखो ॥

दिखाऊं वेद में दोनों निकट मेरे जो आओजी ॥ ५४ ॥
ऋषि मुनियों के वचनों को कहो प्रतिकूल वेदों के ।
तुम्हारी ही ये शक्ति है जो जी चाहो सो गाओ जी ॥ ५५ ॥
रसोईका बनाना काम शूद्रों का वह लिखता है ।
कहार और नाई से बनवाओ रोटी दाल खाओजी ॥ ५६ ॥
नदी पर वृक्ष पर नक्षत्र पर हो नाम जिस त्रिय का ।
विवाह उससे हैं क्यों वर्जित बताओ जी बताओ जी ॥ ५७ ॥
लिखा है ग्रहण के निर्णय में उस ने वाक्य छलबल से ।
कहां है वह शिरोमणि में कोई आओ दिखाओ जी ॥ ५८ ॥
जो शिर पर बाल रखने से घटेगी बुद्धि पुरुषों की ।
तो फिर निज स्त्रियोंके शिर भी तुम निश्चय मुड़ाओजी ॥ ५९ ॥
जो तुम उपनयनको एक चिन्ह विद्या का बताते हो ।
अविद्वान् और शिशुको फिर जनेऊ क्यों पिन्हाओजी ॥ ६० ॥

---

५४ उक्त सत्यार्थ० का पृष्ठ ५६० ।
५५ उक्त सत्यार्थ० का पृष्ठ ५८७ ।
५६ उक्त सत्यार्थ० का पृष्ठ २६३ ।
५७ उक्त सत्यार्थ० का पृष्ठ ८० ।
५८ उक्त सत्यार्थ० का पृष्ठ ३३९ ॥
५९ उक्त सत्यार्थ० का पृष्ठ २५९ ॥
६० उक्त सत्यार्थ० का पृष्ठ २७८ । पृष्ठ २७९ ।

हों जिस मत में करोड़ों जन करो उसका न तुम खण्डन ।
तुम्हीं झूठे हो जो उसके लिये झूठा बताओ जी ॥ ६१ ॥
ये स्वामी जी की युक्ति हैं उन्हें झूठा किया जिसने ।
हँसो इस बुद्धि पर कोई कोई आंसू बहाओ जी ॥ ६२ ॥
लिखा उसने कि वेदों में भी अनुकूल हो सबके ।
उसी को सत्य तुम जानो विरुद्ध अनृत बताओ जी ॥ ६३ ॥
किया है सर्वथा खण्डन प्रकट यह उसने वेदों का ।
न समझे हो तो समझाऊं जो मेरे पास आओ जी ॥ ६४ ॥
वधू बलदेव की लिक्खा है उसने रोहिणी को हा ! ।
नहीं लज्जा कि माता को भी तुम पत्नी बनाओ जी ॥ ६५ ॥
गधी सम गाय को लिक्खा भो लिखा उसने क्या कीजै ।
अक्षीरा को दो जल तृण ये अंध तो मत कमाओ जी ॥६६॥
लिखी जीवों की उत्पत्ति गुरु ने देख ले तेरे ।
अनादि फिर लिखा उनको विरुद्ध ऐसा न गाओ जी ॥६७॥

---

६१ उक्त सत्यार्थ० का पृष्ठ ५४६ में
६३ उक्त सत्यार्थ० का पृष्ठ ३८२ ।
६५ सत्यार्थ० मुद्रित सन् १८६५ का पृष्ठ १०७ ।
६६ उक्त सत्यार्थ० का पृष्ठ १४८ ।
६७ उक्त सत्यार्थ० का पृष्ठ २६२ फिर सत्यार्थ० १८८४ का पृष्ठ २०६

लिखा है मांस से दो काल करना होम भी उसने ।
घरों में अपने इस खुशबू को बस तुमही बसाओ जी ॥ ६८ ॥
वृषभ और गायका वध भी लिखा है तेरे स्वामी ने ।
छिपाने से कहीं छिपता है कितना ही छुपाओ जी ॥ ६६ ॥
न हो घी आध मन भी जो तो फिर मुरदे को मत फूंको ।
उसे जंगल में जाकर दूर छोड़ आओ सड़ाओ जी ॥ ७० ॥
मृतक की भस्म और अस्थी को बाग और खेत में डालो ।
नहीं लज्जा कि तुम वृद्धों की यूं धूली उड़ाओ जी ॥ ७१ ॥
यह देखो तो लिखा क्या है भला उस बुद्धिसागर ने ।
कि हो जब गर्भ में बेटा उसे कपड़े पिन्हाओ जी ॥ ७२ ॥
जनेगी पुत्र वह ऐसा कि होगा वेद का ज्ञाता ।
जो भात और मांस पत्नीको पका कर तुम खिलाओ जी॥७३॥
लिखा है गर्भ धारण में जो निन्दित रात्रि आठ उसने ।

६८ सत्यार्थ० १८७५ का पृष्ठ ४५ ।
६६ उक्त सत्यार्थ० का पृ० ३०३ ।
७० संस्कारविधि मुद्रित संवत् १६३३ का पृष्ठ १४१ ।
७१ उक्त संस्कार विधि का पृष्ठ १५० ।
७२ उक्त संस्कारविधि का पृष्ठ ४१ ।
७३ उक्त संस्कारविधि का पृ० ११ ।

मनु के लेख से कोई हमें आकर गिनाओ जी ॥ ७४ ॥
जो गणना सृष्टि वर्षों के लिखी मत शेष की उलने।
नहीं वहां मूल लाखों की करोड़ों की बनाओ जी ॥ ७५ ॥
अथर्वण वेद में हम को दिखाओ मन्त्र गायत्री।
श्रुति छान्दोग्य में अर्थ कहां है ये बताओ जी ॥ ७६ ॥
तुम्हारी रत्नमाला में लिखा है आर्य का लक्षण।
किसीके कर्म और गुण तो जरा उससे मिलाओ जी ॥ ७७ ॥
पर स्त्री पर पुरुष संगम ही को व्यभिचार कहते हो।
नहीं व्यभिचार पति ग्यारह जो पत्नी को कराओ जी ॥ ७८ ॥
बचाये प्राण स्वामी जी ने कैसे रीछ से बन में।
हमें वृत्तान्त वह भी तो सुनाओ जी सुनाओ जी ॥ ७९ ॥
तुम्हीं कहते हो स्वामी जी ने मुरदा चीर डाला था।
उन्हें इस कर्म और गुण की कोई पदवी दिलाओ जी ॥ ८० ॥

---

७४ उक्त संस्कारविधि का पृष्ठ १२।
७५ ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका पृष्ठ। २३। २४।
७६ पंचमहायज्ञविधि मुद्रित संवत् १९३४ का पृष्ठ २६।
फिर सत्यार्थप्रकाश १८७५ का पृष्ठ १४७।
७७। ७८-आर्योद्देश्य रत्नमाला का पृष्ठ १२। २०॥
७९ दयानन्द का जीवनचरित्र दलपतराय लिखित पृष्ठ ६१।
८० उक्त जीवनचरित्र का पृष्ठ ५६। ५७।

वृषभ की मूर्त्ति में घुस कर रहे जो आदमी छिपकर।
कहां पर मूर्त्ति है ऐसी हमें चलकर दिखाओ जी ॥ ८१ ॥
पिये थे भांग वह ऐसी दही खाने से जो उतरी।
कथन पर ऐसे भगड़ के न धर्म अपना गंवाओ जी ॥ ८२ ॥
लिखा जो चार वेदों में उसी को सत्य तुम जानो।
लिखा जो कुछ कि स्वामीजीने वह उनमें दिखाओ जी ॥८३॥
कहां वहां दायभाग और दण्डके धनकी व्यवस्था है।
विधि वलिवैश्व और संध्या की ढूंढो तो न पाओ जी ॥८४॥
सपिंड और गोत्र का वतला कहां है त्याग वेदों में।
पता आठों विवाहों का सलक्षण वां लगाओ जी ॥ ८५ ॥
कहां है व्याख्या वेदों में सोलह संस्कारों की।
दिखाओ या कि लज्जित होके शिर अपना झुकाओजी ॥८६॥
हमारे आक्षेपों का तो उत्तर मान लेना हैं।
वृथा तुम झूठ लिख २ कर नये गुल क्यों खिलाओजी ॥८७॥
नहीं है पुण्य सद्भाषण समान इसको करो धारण।
नहीं है पाप अनृतसम इसे मन से हटाओ जी ॥ ८८ ॥
किसी की वस्तु जो कुछ लो विना मांगे ही लौटा दो।
न परधन और परस्त्री में कभी मन को चलाओ जी ॥ ८९ ॥

---

८१ । ८२ उक्त जीवनचरित्र का पृष्ठ ६०।

किसी का वाक्य के बाणों से मर्मस्थान मत छेदो।
मधुर वाणी से निज आशय को समझाओ बुझाओ जी ॥६०॥
पराये मांस को खाकर जो तन अपना बढ़ाता है।
नरक को वह कमाता है न जीवों को सताओ जी ॥ ६१ ॥

सनातनधर्मावलम्बियों से निवेदन ॥

जनेऊ छोड़कर तुमने गला कंठी से बंधवाया।
करो उपनयन अथवा नाम शूद्रों में लिखाओ जी ॥ ६२ ॥
जो धन बेटी पै लेते हैं निकाला उनको जाती से।
है यह भी काम खोटा ही सगाई जो छुड़ाओ जी ॥ ६३ ॥
फिरो हो पूजते कबरोंको क्या अज्ञान छाया है।
विवाह की आदि में दूलहको क्यों खर पर चढ़ाओ जी ॥६४॥
जुए का खेलना छोड़ो जी वेश्याओं से मुंह मोड़ो।
बड़ा दुष्कर्म हैं लड़कों से प्रीति मत बढ़ाओ जी ॥ ६५ ॥
करें खण्डन तुम्हारा और छलकर तुम से धन मांगे।
उन्हें देदेके तुम चन्दा वृथा धन क्यों लुटाओ जी ॥ ६६ ॥
जो रक्षा धर्म की चाहो मेरे ग्रन्थों को फहलाओ।
नहीं फिर मन में पछिताओ कुढ़ो और दुःख पाओजी ॥६७॥
दयानन्दी गपोड़ों से बचाओ धर्म को अपने।

जो मिथ्या लेख हैं उनके यह सबको तुम सुनाओ जी ॥९८॥
कलि में धर्म के घातक सहस्रों ही प्रकट होंगे ।
जहां तक बच सके तुम से इसे उन से बचाओ जी ॥ ९९ ॥
किये क्या दान और जप तप किये क्या मन्दिर स्थापन ।
न जब तक धर्म की रक्षा का तुम बीड़ा उठाओ जी ॥१००॥
करो मिथ्यार्थ का खण्डन मेरे लेखों को पढ़ २ कर ।
और अपने पुत्रपौत्रोंकोभी समझाकर पढ़ाओजी ॥१०१॥
ये पुस्तक आप छपवाओ जहां तहां मुफ्त बटवाओ ।
परमयश लोक में पाओ कि धर्म अपना बचाओ जी ॥ १०२ ॥
धनी धर्मात्मा पुरुषों से है ये ही विनय मेरी ।
ज़रा तो धर्म की रक्षा में धन अपना लगाओ जी ॥ १०३ ॥
जगत् के जाल और फन्दों से ईश्वर ने बचाया है ।
जगन्नाथ उससिवा मस्तककिसीको क्यों नवाओजी ॥१०४॥

॥ इति ॥